मालवा

India Family of Language

- दरदी भाषा
- Indo-Aryan Language
- ईरानी भाषा

Indo-Aryan Language → संस्कृत (वैदिक) → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → शौरसेनी अपभ्रंश → हिन्दी

हिन्दी →
- राजस्थानी → मेवाती, मारवाड़ी, मालवी, जयपुरी
- पश्चिमी (उपभाषा) → (ब्रज) बुंदेली, कौरवी (खड़ी बोली)
  - बोली (Dialect) ✓
- पहाड़ी → गढ़वाली, कुमायनी
- पूर्वी → बघेली, अवधी
- भोजपुरी बिहारी

हिन्दी (भाषा)
↓
(5) उपभाषा
↓
(17) बोली

मालवा —(भाषा)

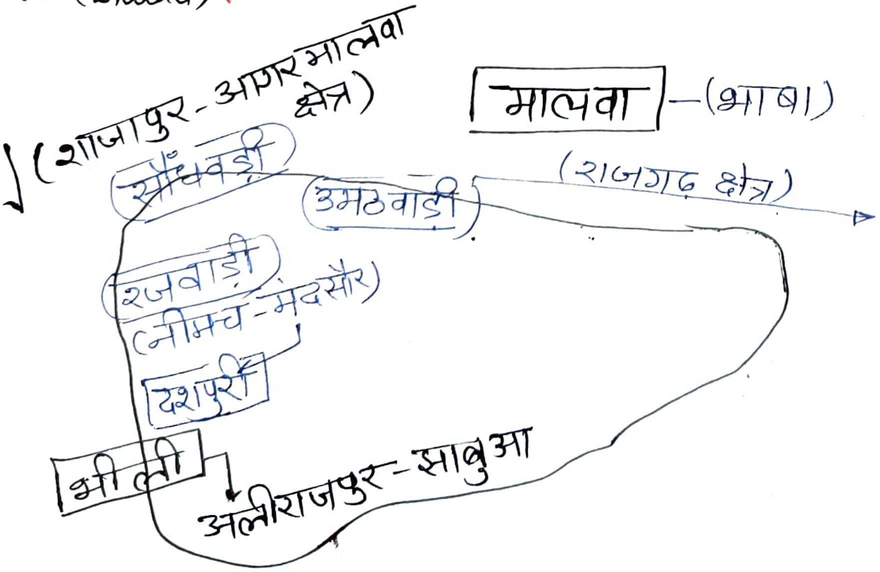

कुंवर चैनसिंह (सीहोर) उमठवाड़ वंश के थे। जितना क्षेत्र इनके अंतर्गत आता है उसको उमठवाड़ क्षेत्र कहते हैं और यहाँ बोली जाने वाली बोली को उमठवाड़ी (मालवी का प्रकार)

हिन्दी

- राजस्थानी
  - मेवाती
  - मारवाड़ी
  - मालवी
    - उमठवाड़ी — राजगढ़
    - सौंधवाड़ी — शाजापुर, आगर-मालवा
    - रजवाड़ी — नीमच
    - दशपुरी — मंदसौर
    - भीली/डूंगरी — अलीराजपुर-झाबुआ
    - आवन्ती — उज्जैन
  - जयपुरी
- पूर्वी
- पश्चिमी
- बिहारी
- पहाड़ी

मालवा में चित्रकला →

- भित्ति चित्र
  - गुहा चित्र — Cave paintings
  - भित्ति चित्र

Cave paintings →

1) **भीमबेटका** (सबसे पुराना)
   1957-58 में वाकणकर ने खोजा
2) **समराङ्गणसूत्रधार**
   - राज भोज द्वारा लिखी किताब
   - चित्रकला की बातें
3) मालवा के घरों के बाहर बनी हुई Painting → **चित्रावण**
4) Painting करने वाले → **चितेरे**

वस्त्र छपाई

1) भैरुगढ़ प्रिंट (उज्जैन)
2) उठाना प्रिंट (नीमच)
3) बाघ प्रिंट (धार)

→ **छीपा कला** (प्रिंटेड कपड़े मिलते हैं)

Note:- इस्माइल जफर खाँ → छीपा प्रिंट के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित।

सिलबट्टा → पत्थर से पीसने का बनाना (सिलावट जाति के लोग)
बैरगुंड (समतल) → बाँस की चीजे
गोबर आर्ट → लीपना और उस पर चित्रकलाएँ

कांस्य का काम करने वाले → कसेरे
तांबे का काम करने वाले → ताम्रकार
} (जाति)

लोहे का काम करने वाले जो एक गाड़ी में अपना पूरा सामान लेकर चलते है } → गाड़ोलिया लोहार

मालवा के नाट्य →
- माच ✓

मालवा के नृत्य →

1) मटकी नृत्य (क्योंकि इसमें जो ढोल बजाया जाता है, उसे मटकी कहते है)

2) गरबा नृत्य (कलश के चारों ओर) गरबी (माता को लड़के उठाकर नृत्य करते है)

3) गणगौर [रनुबाई – धनियार (शिव-पार्वती विवाह)] [यह निमाड़ में भी होता है]
(चैत्र के महीने में)

4) डण्डा नृत्य

5) विछुआ नृत्य (एक कपड़े की मदद से विछुआ चढ़ाया भी जाता है, फिर उतारा भी जाता है।)

6) आड़ा खड़ा नाच 7) रजवाड़ी नृत्य

मालवा के गायन

1) तुर्रा कलगी – एक गाता है, दूसरा जवाब देता है [यह निमाड़ में भी होता है]
(सवाल जवाब चलते है) → कलगी अखाड़ा, तुर्रा अखाड़ा

5) संजा गायन

2) भरथरी गायन ⟷ 6) भृतहरि गायन
(राजा के भजन) → शृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक

3) निर्गुणी भजन

4) हीड़ गायन (अहिर)

मालवा में उत्सव → (1) चैत्र की पहली तारीख को मनाया जाता है → गुड़ीपड़वा – हिन्दु नववर्ष

(2) गणगौर

(3) आखातीज – (अक्षय तृतीया)
(वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया) –(सबसे शुभ दिन)

(4) रक्षाबंधन – (सावन में)

(5) हरतालिका तीज – (भादों में) –(शुक्ल पक्ष में) ✓
पार्वती जी ने शिवजी के लिए रखा था
(उम्र भर रखना पड़ता है)

(6) कृष्ण जन्माष्टमी – (भादों में)
(कृष्ण पक्ष की आठवीं तारीख) – कृष्ण जी की जन्म
(कृष्ण पक्ष की छठवीं तारीख) – हलछठ (बलराज जी)

(7) संजा (अश्विन माह में)
घर के बाहर गोबर का लीपते है और 16 दिन 16 अलग अलग चित्रकला करती है।

(8) नवरात्र (अश्विन या कुंवार माह में)]–[एक चैत्र में भी होती है] ✓
~~कार्ति~~ कार्तिक

(9) दीवाली (कार्तिक माह)

(10) मकर संक्रान्ति (पूष माह)

(11) बसंत पंचमी (चैत्र माह)

(12) होली (फाग माह)

हिन्दी 12 माह → (1) चैत्र (2) वैशाख (3) ज्येष्ठ (4) असाड़ (5) श्रवण (सावन)
(6) भादों (7) अश्विन (8) कार्तिक (9) अग्रहायन
(10) पूसा (11) माघ (12) फाग।

(निमाड़)

① निमाड़ में चित्रकला

ⓐ Jirauti (जिरौती) → अमावस्या में सावन के महीने में घर की दीवारों पर चित्र (हरियाली अमावस्या की पूजा के लिए)

- घर के भीतरी दरवाजों के दोनों ओर की दीवारों के एक विशेष आकार के हिस्से को गेरु के रंग से पोत कर उस पर पीले रंग से जिरौती बनाई जाती है।

ⓑ नागपंचमी चित्रकला →

ⓒ दशहरा चित्रकला →

ⓓ सांझाफूली → 16 दिन तक अलग-अलग painting (इसे ही मालवा में 'साँजा' कहते हैं)

ⓔ पगल्या → जब कोई बच्चा पैदा होता है तब पैरों को बनाकर चित्र बनाए जाते हैं।

प्रिंट →

ⓕ महेश्वरी प्रिंट (खरगौन)

- साड़ी पर प्रिंट

लकड़ी की कला →

1) खरादकला →

निमाड़ में गायन →

1) गणगौर गायन → (यह एक पर्व भी है, नृत्य भी है, गायन भी है)

2) संत सिंगाजी गायन → सिंगाजी के भजन

- संत सिंगाजी → खंडवा के हरसूद तहसील के खजूरी गाँव में (सिंगाजी गाँव)② पैदा हुए
(खंडवा)
- पिपल्या (इंदिरा सागर बाँध के डूब क्षेत्र में) इनकी समाधि है।
- इनके शिष्य → कालूजी (खरगौन के पिपल्या खुर्द में पैदा हुए)
(कालूजी का मेला) → ↑

3) नाथपंथी गायन - कबीर के दोहे गाये जाते हैं।

4) कलगी तुर्रा -

5) निरगुणिया गायन (निरगुण बल के भजन)

6) मसाण्या / कासा खोजी गायन (मरने पर) ✓

निमाड़ में नाटक →

1) गम्मत → कोई एक कहानी (धार्मिक) का मंचन करते हैं।

नृत्य →

1) काठी नृत्य → (यह नाच भी है, नाटक भी है)

dancer की dress → बाना या बाघा कहते हैं (चटक रंग की वेशभूषा)

- दल में शामिल बड़ा भगत तथा सहायक नर्तक को छोटा भगत कहा जाता है।

- एक व्यक्ति सजी-धजी काठी माता को उठा कर नर्तक दल के साथ चलता है। इसे 'रजाल्या' (सेवक) कहते हैं।
- देव प्रबोधिनी एकादशी से महाशिवरात्री तक 4 माह चलता है
- पचमढ़ी के महादेव मंदिर में समापन होता है।

2) ढोल्या नृत्य

3) खमरास या रासलीला → (नृत्य और नाटक)

4) फेफरिया नृत्य → शहनाई जैसे Instrument बजाकर उस पर नृत्य किया जाता है (शादी पर)

⑤ माँडल्या नृत्य → शादी में किया जाता है।

बुंदेलखंड की कला → (MP + UP)

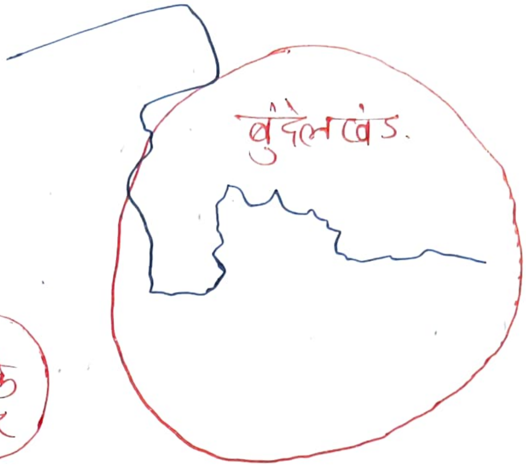

- नृत्य →

① **राई नृत्य** — म.प्र. का राजकीय नाच
बुंदेलखंड की बेड़नी जाति की (बेड़िया) महिलाएँ करती है। (मृदंग के ऊपर)
(वैश्यावृत्ति में लीन)

· इसके लिए सरकार ने जबाली योजना भी चलाई (जाबलि)

② नौटंकी नृत्य → (अश्लीलता)

③ कानड़ा नृत्य → धोबी समाज द्वारा खुशी के मौकों पर

④ सैरा नृत्य → डंडे लेकर नृत्य करते है। (रक्षाबंधन पर) - वीर रस प्रधान
↳ पुरुष करते हैं

⑤ **मोनिया नृत्य** → दीवाली के अगले दिन होता है।
(डंडापाई/दीवारी/अहिराई नृत्य) (मोरपंख लेकर किया जाता है) मौन रहते है।
(डंडे लेकर भी किया जाता है)

⑥ बधाई नृत्य → खुशी के अवसर पर लोकल महिलाओं द्वारा
(शीतला माता की पूजा होती है)

⑦ ढिमराई नृत्य → ढीमरी जाति द्वारा
(जो राजा के यहां पानी भरते थे।)

⑧ अखाड़ा नृत्य → दशहरे के समय पहलवानों द्वारा
(शस्त्र पूजन करते है)

⑨ जवार नृत्य → चैत्र और क्वांर में नवदुर्गा के समय
(सर पर ज्वार रख के)

(10) राम नृत्य - रासलीला → राम रहस / कृष्ण रहस

(11) शवला नृत्य - धोबी जाति द्वारा

(12) राछ बसाया - विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा किया जाता है।
(सभी मंदिरों पर पान बताशे दुल्हे द्वारा घोड़ी पर जाकर चढ़ाये जाते है)

(13) कार्तिक नृत्य - कार्तिक स्नान पर महिलाओं द्वारा नृत्य

(14) देई देवता नृत्य - शादी के समय
वर-वधु के देवी पूजन के समय महिलाओं द्वारा

(15) नौरता नृत्य → नवरात्रि पर
· झिझिमा यानी छिद्रमय मटके में दीपक रखकर माँ दुर्गा की स्तुति
· सुआटा राक्षस का चित्र बनाती है (कुंआरी लड़कियों द्वारा)
↓
(मामुलिया चित्रकला)

बुंदेलखंड का नाट्य →
1) स्वाँग - अलग-अलग किरदार बनकर स्वांग रचाते है
2) रहस - राम रहस
कृष्ण रहस

गायन →
1) आल्हा गायन - परमार्दिदेव चंदेल के दरबार में जगनिक ने आल्हाखण्ड की रचना की है जिसे रक्षाबंधन पर (कजली) गाया जाता है।)
(वीर रस)

2) भोला गीत / लमटेरा अथवा बँबुलिया गीत →
सावन माह में भोले नाथ के गीत

3) फाग - होली के समय

4) बेरायटा गायन - महाभारत और रामायण का गायन

5) हरदौल की मनौती - जुझार सिंह → (शाहजहाँ के समय)
↓
भाई हरदौल → इनको लोकदेव मानते है।

6) जगदेव का पुवारा - देवी की आराधना में

चित्रकला →

1) सुरैती - दीवाली पर लक्ष्मी जी की पूजा के लिए की गई चित्रकला।

2) नौरता - मामुलिया चित्रकला (सुआटा राक्षस) - नवरात्रि

3) मोरते - विवाह के समय घर की दीवारों पर की गई चित्रकला।

4) मोरइला - मोर का चित्र बनाना

5) अगरोहन - मंडप में की गई चित्रकला। (शादी के समय)

6) सँजा फूली - (बुंदेलखंड और निमाड़) - मालवा में संजा
16 दिन तक चित्र बनाना

बघेलखंड की कला/संस्कृति

1) **बिरहा नृत्य** (प्रतिद्वंद्वि नृत्य) →
- इसका कोई निश्चित अवसर नहीं है
- अहीर लोग किसी भी खुशी के अवसर पर करते हैं।

दादर नृत्य → जब बिरहा नृत्य अपने घर पर न कर के किसी ठाकुर या गाँव में करते हैं तो उसे दादर ले जाना कहते हैं।

2) **राई नृत्य** - पुरुष करते हैं पैरों में घुंघरू बाँध कर करते हैं।

3) **केहरा नृत्य** - मालवा में आड़ा-खड़ा नाच होता है

- आड़ा → टेढ़े होकर करते → इस समय ठुमकी ताल बजाते हैं
- खड़ा → खड़े होकर भी करते हैं → इस समय केहरवा ताल और केहरवा गायन करते हैं।

इसी ताल पर जब बघेलखंड में नृत्य करते हैं तो उसे केहरा नृत्य कहते हैं। (ढपली और बाँसुरी पर)

- स्त्री और पुरुष अलग अलग शैली में करते हैं।
- स्त्रियाँ फुरहरी शैली में करती हैं। (दोनों हाथों की अँगुलियों को जोड़कर)
- बारी जाती में यह नाच विशेष लोकप्रिय है।

4) **कलसा नृत्य** - बारात आने के समय वधु पक्ष की ओर से सर पर कलश रखकर नृत्य

[(बुंदेलखंड में शहद बधाया होता है)
(गुजरात के भवई नृत्य की तरह)] → 7 कलश एक के ऊपर एक

(5) केमाली नृत्य → (साजन - सजनी नृत्य)

- कोटवार तथा चमार जाति में अधिक प्रचलित

(6) कोल दहका नृत्य → • कोल जाति द्वारा दहका नृत्य

- पुरुष गायक और वादक
- स्त्रियाँ गायक और नृत्य

(7) करमा नृत्य - करम राजा - करम रानी

रूठी रानी

मनाने के लिए नृत्य

- प्रायः आठ पुरुष और स्त्रियाँ
- एक दूसरे का अँगूठा पकड़ने का प्रयास करते है।

(इस नृत्य को 3000 लोगों ने एक साथ कर Guinea Book में नाम दर्ज कराया है)

(8) सैला नृत्य - सैला का अर्थ है सवा हाथ का डंडा।

आदिदेव बघेसुर → सरगुजा की रानी

सरगुजा के राजा

└→ (नाराज होकर अमरकँटक आ जाते है और बाँस का डंडा लेकर नृत्य करते है।) (पुरुष)

गायन →

1) बिरहा गायन

2) केहरवा गायन

3) सरमन गायन - श्रवण कुमार की याद में गीत गाते है

- बसदेवा जाति के लोग गाते है

✓ [यह अधिकतर पटाई जाती है (दीवाली से फाग तक भीख माँगते है)

नाट्य →

1) जिन्दबा नाट्य - बारात जाने के बाद महिलाओं द्वारा पुरुषों का वेष धारण करके गालियों द्वारा अश्लील नाट्य किया जाता है।

2) मनसुखा नाट्य - गाँव में रामलीला का मंचन